नमाज़-ए-तरावीह 8 रकअत सुन्नत है या 20 रकअत एक तहकीक

नमाज़े तरावीह की रकअते कितनी है ? इस सिलसिले मे मौजूद इख्तेलाफ तो आपके सामने है कि कोई 8 रकअत तरावीह और 3 वित्र कुल 11 रकअते पढ़ता है, कोई 10 तरावीह और 3 वित्र कुल 13 रकअते पढ़ते है, और कोई 20 रकअते तरावीह और 3 वित्र कुल 23 रकअते पढ़ता है ।

जबकि हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्कलानी ने फतहुलबारी मे, अल्लामा ऐनी हनफी ने उमदतुल कारी मे, इमाम शौकानी ने नैलुलवतार मे और अल्लामा मुबारकपुरी ने तहफतुल हौजी मे और दीगर अय्यमा व फकीह और अहले इल्म ने अपनी अपनी किताबो मे अहदे खिलाफते राशिदा के बाद वाले मुख्तलिफ लोगो से रकअते तरावीह की मुख्तलिफ तदाद नकल की है, उनमे बगैर वित्र के और वित्र समेत 11 और 13 रकअते भी मनकूल है और नमाजे तरावीह ही की 16, 20, 24, 28, 34, 36, 38, 39, 40, 41, 46, 47, 49, रकअते भी मनकूल है (देखिये फतुहुल बारी 4-253, उमदतुल कारी 178, 204-205, नैनुलवतार 2,3,53, तहफतुल हौजी 3,522, 532)

एक आम आदमी रकअते तरावीह मे इख्तेलाफ की ये भरमार देखकर हैरान रह जाता है कि आखिर सही बात क्या है ? और इस इख्तेलाफ का हल क्या है ?

इन अरब मुमालिक और खिलजी रियासतो मे तो वित्रो समेत तेरह रकअतो का भी रिवाज है, जिसमे दरअसल नमाज़े ईशा की आखरी दो सुन्नते या फजर की दो सुन्नते या महज दो इफतेताही रकअते शामिल होती है जैसा की उमदतुलकारी, तहफतुलहौजी, शरह नौवी मुस्लिम, सलातुल तरावीह, और फतुहुल मलहम मौलाना श्ब्बीर अहमद उस्मानी मे तफसील मजकूरा है ।

हमारे बर्रे सगीर की मुमालिक पाक व हिन्द वगैरह मे सिर्फ दो ही अदद है, एक वित्रो समेत 11 रकअत यानि 8 रकअत तरावीह और 3 रकअत वित्र और दूसरा वित्रो समेत 23 रकअत यानि 20 रकअत तरावीह और 3 वित्र और इन हर दो नज़रिये के कायलीन उलेमा ने अपना अपना मौकूफ साबित करने के लिये आज तक बेशुमार किताबे रिसाले और मजामिन लिखे है और फरीकेन ने ही अपनी अपनी बात मनवाने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया है, लेकिन अवामुन्नास (आम लोग) के नज़दीक आज भी ये सवाल बाकी है कि आखिर सहीह बात और अददे मसनून क्या है ? और फुकहा के बीच पाये जाने वाले इख्तेलाफ का हल क्या है ?

20 रकअत तरावीह और 8 रकअत की दलीले और तहकीक

पहली हदीस 20 रकअत की

''इब्ने अबी शैबा कहते है कि हदीस बयान की हम को यज़ीद हारून ने वो कहते है हम को खबर दी इब्राहिम बिन उस्मान ने वो हकम से रिवायत करते है वो वो मकसिम से रिवायत करते है वो इब्ने अब्बास रजि0 से कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान मे 20 रकअते और वित्र पढ़ते थे ।''
(मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा जिल्द 2 394, सुनन कबीर बैहकी जिल्द 2 496, मुन्तखब मुसनद अब्द बिन हुमैद जिल्द 1 73, तबरानी कबीर जिल्द 3 148, अलकमल इब्ने अदी 2/1, खतीब बगदादी जिल्द 1 209, मुन्तखब मन फवाईद जिल्द 2 268)

पहली हदीस 8 रकअत की

''अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह कहते है कि उन्होने हजरत आईशा रजिअल्लाह अन्हा से पूछा की रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ रमज़ान शरीफ मे कैसे थी, तो उन्होने कहा कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान मे और गैर रमज़ान मे 11 रकअत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे । चार रकअते आप पढ़ते उन की खूबी और लंबाई का कुछ न पूछो

फिर चार रकअते पढ़ते उन की खूबी और लंबाई का कुछ मत पूछो फिर तीन रकअत (वित्र) पढ़ते हज़रत आयशा रजि0 ने कहा या रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या आप वित्र पढ़ने से पहले सो जाते है, तो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ आयशा मेरी आंखे सो जाती है और मेरा दिल नहीं सोता ।''

(सहीह बुखारी किताबुस्सलात तरावीह हदीस नं0 2013, सहीह मुस्लिम जिल्द 1 254, अबूदाऊद जिल्द 1 196, तिर्मिजी जिल्द 1 58, नसई जिल्द 3 234, सहीह इब्ने खुजैमा जिल्द 2 192, मुसनद अहमद जिल्द 6 36, मुसनद अबू अवाना जिल्द 2 334, मुवत्ता इमाम मुहम्मद 141, बैहकी जिल्द दो 495, मुवत्ता इमाम मलिक 81, दारमी जिल्द 1 344,)

तहकीक :–

ये इब्ने अबी शैबा वाली हदीस सब ने सिर्फ एक ही सनद से एक दूसरे से नकल की है, इसके बरअक्स हजरत अबू सलमा रह0 वाली हदीस अलग अलग सनदो से रिवायत की गई है हज़रत आयशा रजि0 वाली इस हदीस को अहले हदीस हज़रात 11 रकअत मय वित्र तरावीह के अव्वलीन दलील मानते है लेकिन एतराज करने वाले हक्कानी साहब ने लिखा है– ये बात तहज्जुद की हो रही है तरावीह का इस हदीस मे कोई जिक्र नहीं । हनफी मोअतरिज (एतराज़ करने वाले) ने सहीह बुखारी की हदीस पर राय दे दी की ये तहज्जुद के बारे मे है और इब्ने अब्बास रजि0 वाली हदीस 20 तरावीह के सबुत मे पेश कर दी । इस तरह एतराज़ी राय 20 रकअत करने का दरवाजा हमारे लिये भी खोल दिया । बड़े अदब से अर्ज है कि अहले हदीस उलेमा अव्वल से आखिर तक 8 रकअत की दलील इसी बुखारी की हज़रत आयशा रजि0 वाली हदीस को मानते है और उन अहले हदीस उलेमा की राय या मज़कूरा हदीस का मायना व मतलब पेश करने से कोई फायदा नहीं क्योकि मुखालेफिन का दिल अहले हदीस की तरफ से मैला है साफ नहीं है इस लिये हम इंशाअल्लाह बड़े बड़े हनफी मुहद्दिस, हनफी फकही, और शरहीन हदीस की राय इन दोनो हदीसो की मुत्तालिक पेश करेगे ताकि दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाये और पता चल जाये कि हकीकत क्या है ।

हनफी उलेमाओ के कौल इन दोनो हदीसो के मुत्तालिक

शरह बुखारी अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद खतीब कसतलानी रहमतुल्लाह

''ये 11 रकअते फजर की दो रकअते छोड़ कर (क्योकि एक रिवायत 13 की भी है इसमे फजर की दो सुन्नतो को शामिल किया है) और दो इब्न अबी शैबा ने इब्ने अब्बास रजि0 से रिवायत किया है कि रसुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान मे 20 रकअते पढ़ते थे तो इस की सनद जईफ है आरै फिर हज़रत आयशा रजि0 की सहीहीन वाली हदीस भी इस के खिलाफ है इस के साथ ये बात भी कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की रात की नमाज़ का हाल वो दूसरो से ज्यादा जानती थी ।'' (इरशाद शरह बुखारी जिल्द दो 267)

सहीह बुखारी व मुस्लिम की हज़रत आयशा रजि0 वाली हदीस अगर तरावीह के बारे मे नहीं है तो अल्लामा कसतलानी ने 20 रकअत तरावीह की मुकाबले मे क्यो बयान किया और क्यो उस से 11 रकअते सहीह साबित कर के 20 रकअत को रद कर दिया । आखिर वो भी तो मुक्कलिद थे ।

शरह बुखारी अल्लामा हाफिज अहमद अली हनफी सहारनपुरी रहमतुल्लाह अलैह

''आप रमज़ान और गैर रमज़ान मे 11 रकअत से ज्यादा नहीं पढ़ते थे और जो इब्ने अबी शेबा ने और तबरानी और बैहकी ने रिवायत किया है कि आप रमज़ान शरीफ मे वित्र के अलावा बीस रकअत पढ़ते थे वो जईफ है और सहीह हदीस के खिलाफ भी है ।'' (बुखारी शरीफ जिल्द अव्वल 154 का हाशिया)

इमाम कसतलानी के साथ साथ शरह बुखारी मौलाना अहमद अली हंफी सहारनपुरी रह0 ने बीस रकअत तरावीह के मुकाबले मे हदीसे आयशा रजि0 को क्यो बयान किया मालूम हुआ कि बुखारी शरीफ की रिवायत तरावीह के बारे मे है ।

शरह बुखारी अल्लामा हाफिज इब्ने हजर रह0 लिखते है

''और जो इब्ने अब्बास रजि0 की हदीस से इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया है कि रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान मे 20 रकअत और वित्र पढ़ते थे, इसकी सनद जईफ है और ये सहीहीन की आयशा रजि0 की हदीस भी इस के खिलाफ है बावजूद इसके हज़रत आयशा रजि0 नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के रात के अमल को दूसरो से ज्यादा जानती थी । और अल्लाह सब से ज्यादा जानने वाला है ।''

अगर ये बुखारी शरीफ की हदीस तरावीह के बारे मे नही है तो अल्लामा हाफिज इब्ने हजर अल्लामा अहमद अली सहारनपुरी और इमाम कसतलानी को क्या हो गया था कि उन्होने 20 के मुकाबले मे 11 रकअत तरावीह मय वित्र साबित की और 20 को मर्दूद ठहराया ।

सबके कौल अगर जमा कर दिये जाये तो ये छोटा सा रिसाला एक मोटी सी किताब की शक्ल ले लेगी लेहाजा हम यहां उन उलेमाओ के नाम लिख देते है जिन्होने इब्ने अबी शैबा की रिवायत को जईफ करार दिया है । ये हनफिया के घर की शहादत होगी, दिगर अहले इल्म के कौल के कहने ही क्या ।

इस हदीस को जईफ कहने वाले :-

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह0 (देवबंद) (बुखारी जिल्द 2 सफा 420),

अल्लामा इब्ने नजीम रह0 (बहरू रायेक जिल्द 2 सफा 72),

इमाम जैली हनफी रह0 (नसबुल राय जिल्द 1 सफा 293),

इमाम इब्ने तैमिया हंबली रह0

अल्लामा अबू तय्यब मुहम्मद बिन अब्दुल कादिर सिंधी मदनी हंफी नक्शबंदी रह0 (शरह तिर्मिजी जिल्द 1 सफा 423)

मौलाना वसीअ अहमद हंफी (तालीके मआनी अल आसार लित तहावी सफा 350)

मौलाना ज़करिया साहब हंफी कांधलवी रह0 (अवज्जुल मसालिक, शरह मुवत्ता इमाम मालिक जिल्द 1 सफा 39)

शेख अब्दुल हक हंफी मुहद्दीस देहलवी रह0 (मसबता बिस्सुन्नह सफा 217)

बानी दारूल उलूम देवबंद मौलाना रशीद अहमद गंगोही का बयान

''ग्यारह रकअत तरावीह सरवरे आलम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित व मुवक्कद है''

(रिसाला अल हक्कुस सरीह)

रईसुल फुकहा अबूल हसन शरन बलाली रह0

मुल्ला अली कारी हनफी रह0 (मिरकात दर हाशिया मिश्कात जिल्द 1 सफा 115)

मौलवी महमूदुल हसन ननौतवी हंफी रह0 (हाशिया रकाया सफा 36)

ये कुछ मशहूर उलेमाए हंफी के नाम है जिन्होने इब्ने अबी शैबा वाली रिवायत को जईफ करार दिया है ये फेहरिस्त मजीद लंबी है मगर हम इतने पर ही बस करते है । और हमारे काबिल दोस्तो का ध्यान इस हदीसे जईफ की सनद की तहकीक की तरफ करते है ।

20 रकअत वाली हदीस की सनद का हाल

सनद कहते है रावियो के उस सिलसिले को जो एक दूसरे से सून कर नीचे तक पहुंचाते है अगर सनद मे सच्चे मजबूत और इमान दार रावी हो और कई कई हो तो वो हदीस सहीह की किस्म मे से है अगर रिवायत करने वाले खोटे झूठे हो तो वो रिवायत सहीह नहीं है । 20 रकअत की सनद मे एक रावी अबू शैबा इब्राहिम बिन उस्मान है इस की ऊपर हाकिम बिन उतैबा बिन नहास कूफी है, इस की ऊपर मकसिम रह0 ताबई है और उन के ऊपर हज़रत इब्ने अब्बास रजि0 है और फिर रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक इस्मे गिरामी, इस सनद मे 2 खोटे (जईफ) रावी जमा हो गये है पहला तो अबू शैबा इब्राहिम बिन उस्मान है और दसूरा हाकिम बिन उतैबा बिन नहास कूफी है, इन

दोनो ने ताबई मकसिम रह0 और सहाबी इब्ने अब्बास रजि0 और फिर रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के पाक और मुबारक नाम इस्तेमाल कर लिये और 20 रकअत पढ़ने का बयान उन के हवाले से गढ़ लिया । और उन का ये बयान मुनकर है और मुनकर उसे कहते है जो सहीह हदीस के खिलाफ हो । मुनकर रिवायत गढ़ना बदतरीन गुनाह है । इन दोनो झूठे रावियो के अलावा बड़े अफसोस की बात है कि हक्कानी साहब देवबंदी ने अपनी किताब शरीयत और जहालत मे इब्ने अब्बास रजिअल्लाह अन्हू पर एक बहुत बड़ा झूठ गढ़ दिया कि उनका फतवा हुजुरे अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने मे चलता था, इसकी वजाहत भी अगले सफाहात मे इंशाअल्लाह आ रही है ।

दोनो झूठे रावियो अबू शैबा इब्राहिम बिन उरस्मान और हकम बिन उतैबा कूफी के बारे मे हंफी उलेमाओ के कौल

(1) शरह बुखारी मे अल्लामा ऐनी हंफी रह0 लिखते है :–

फने हदीस के इमामो ने इसको झूठा कहा है इमाम अहमद और इमाम बुखारी और इमाम नसई वगैरह ने इस को जईफ करार दिया और इब्ने अदी ने अपनी किताब अल कामिल मे इस की 20 रकअत वाली हदीस को मुनकर रिवायत मे शामिल किया है ।(उमदतुल कारी, शरह सहीह बुखारी जिल्द 5, सफा 359)

अल्लामा ऐनी रह0 का शुमार हंफी मज़हब के सख्त तरीन फुकहा मे होता है उन्होने भी 20 रकअत की रिवायत के रावी का कच्चा चिट्ठा खोलने मे ज़रा पस ओ पेश नहीं किया । अल्हम्दुलिल्लाह ।

(2) अस्मा–ए–रजाल के मसल्लमा इमाम अल्लामा ज़ैहबी रह0 का तफसीली बयान :–

अल्लामा ज़ैहबी रह0 अपनी मशहूर किताब मीजान अला अतदाल फी नकदरिजाल मतबूआ दारूल ख्याअल किताबुल अरबिया किस्म अव्वल सफा 47 पर लिखते है :– इब्राहिम बिन उरस्मान अबू शैबा शहर का काज़ी है और इमाम अबू बक्र बिन शैबा का दादा है वो अपनी मां के दूसरे खाविन्द हकम बिन अतैबा से रिवायत करता है इमाम शबा ने दूसरी रिवायत पर भी इस

को झूठा बताया है क्योकि उसने हकम से और हकम ने अबू लैला से ये रिवायत किया है कि जंगे सिफ्फीन मे सत्तर बदरी साहबी रजि0 मौजूद थे कहा इमाम शबा ने वो ये बात झूठ कहता है क्योकि अल्लाह कि कसम मै ने खुद हकम से बात चीत की तो हकम ने बताया कि जंगे सिफ्फीन मे हम को सिर्फ एक बदरी सहाबी खुजैमा रजि0 मिले । इमाम जैहबी कहते है कि ताज्जुब है उस जंगे सिफ्फीन मे हज़रत अली और हज़रत अम्मार रजि0 भी शरीक थे ये दोनो भी बदरी सहाबी है ।

ऊपर की इबारत से मालूम हुआ कि जंगे सिफ्फीन मे ज्यादा से ज्यादा 3 बदरी सहाबी रजि0 शामिल थे जिसे बढ़ा कर इब्राहिम बिन उस्मान ने 70 की तदाद कर दी तो क्या ऐसा शख्स आठ रकअत तरावीह को बढ़ाकर 20 नहीं बता सकता ? और अगर 70 की जगह इसके मां के खाविन्द हकम बिन उतैबा ने 1 सहाबी बताई है तो वो भी झूठा साबित हुआ । और ये दोनो झूठे 20 रकअत की रिवायत मे जमा हो गये है

ये दोनो झूठे रावियो की वजह से 20 रकअत की हदीस मुतरक (ऐसी जईफ हदीस जिसके रावी पर झूठ की तोहमत हो) साबित हुई । अबू शैबा जिस औरत का बेटा था तो हकम उसी औरत का दूसरा खाविन्द था और ये दोनो सौतेले बाप बेटे सरकारी आदमी यानि काज़ी थे और इन सरकारी आदमियों ने शहीदे कर्बला हज़रत हुसैन रजि0 से ये लेकर बाद के ज़मानो तक क्या क्या जुल्म ढहाये है वो मुसलमानो की तारीख मे देखिये । बगदादी रह0 बलाज़री रह0 इब्ने असीर रह0, इब्ने कसीर रह0 और इब्ने खलदुन रह0 ने इस्लामी तारीख मे इनका अच्छा नक्शा खींचा है । मेहरबानी करके अल्लाह के वास्ते गांलियां देने के पहले मुताला तो करिये भाईयो ।

जलीलुकद्र सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 पर झूठ बांधने वाले हक्कानी साहब –

अपनी टोली मे एक किताब शरीयत या जहालत लिखकर मशहूर हुए हक्कानी साहब इस अबू शैबा वाली हदीस को तरावीह के मसले पर लिखकर आगे कहते है :–

''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 को इस बात की जुस्तजु भी रहती थी कि हुजुर

सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तरह रात को इबादत करते थे। **ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 वो हस्ती है जिन का फतवा हुजुर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी मे भी चलता था।** लिजिये 20 रकअत तरावीह का सबूत मिल गया अब वो इनाम जिस का आप हर साल एलान करते है हमे दिया जाये और अपने वादे को पूरा किया जाये क्योकि आप इमान वाले है और इमान वालो को वादा पूरा करने के लिये कुरआन करीम हुक्म दे रहा है।'' (शरीयत या जहालत इजाफा शुदा सफा 196, और अलग से जो किताबचा छपा है उस का सफा 49-50)

मोतरिज (एतराज करने वाला) हक्कानी साहब की इस इबारत को अच्छी तरह पढ़े उन्होने इस मतरूक हदीस को लिखकर 20 रकअत साबित करने की कोशिश तो की ही साथ ही इनाम का मुतालबा भी किया और साथ साथ ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 पर झूठ भी बांध डाला की उन का फतवा आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिन्दगी मे चलता था। ये जुमला ताज्जुब मे डालता है कि उन्हे सहाबा किराम रजि0 की तारीख से बिल्कुल नवाकिफियत थी। आईये तहकीक करे

तहकीक :-

अगर उनका ये दावा है तो उन्होने ये नहीं बताया कि मदीना मे किस हिजरी सन् 1 मे या 2 मे या 3 मे या 4 मे या 5 हिजरी सन् मे उनका फतवा चलता था और वो कौन सा फतवा था जो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजुदगी मे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 ने दिया।

तारीखे इस्लाम से थोड़ी सी भी वाकिफियत रखने वाले जानते है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0 हिजरत से 3 साल पहले पैदा हुए थे यानि हिजरत के वक्त उनकी उम्र 3 साल थी। और मक्का फतह के कुछ अर्सा पहले 8 हिजरी मे अपने वालिद हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रजि0 के साथ मक्का तशरीफ लाये और अपने वालिद के साथ मुशर्रफ बा इस्लाम हुए उस वक्त उनकी उम्र कुल 11 साल की थी। उन्होने अपनी उम्र का 12 और 13 वा साल मदीना मे गुजारा फिर हुजुर अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हो गया। अबूबक्र सिद्दीक रजि0 के ढाई साला खिलाफत के बाद सैय्यदना उमर रजि0 की खिलाफत मे इल्म हासिल करना शुरू किया और रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम अहादिस दुसरे सहाबा किराम रजि0 से सीखी बहुत सी रिवायत उन्होने खुद हज़रत उमर रजि0 से ली है। तो क्या उन्होने अपनी उम्र के ग्यारहवे से लेकर तेरहवे साल के बीच हुजुर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजुदगी मे फतवे दिये, कमाल है जबकि

बड़ी बड़ी उम्र की सहाबा किराम आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के जलाल की ताब ना लाकर आपके चेहरे अनवर पर नजर तक नही डालते थे, अपनी नजरो को नीचे रखे हुए होते थे फिर आपके सामने कलाम करने की तो बात ही क्या, और आपके कलाम पर कलाम करने का हुक्म क्या अल्लाह ने उम्मती मे से किसी को दिया है ?

(और ज्यादा जानने के लिये देखिये असहाबा तजकिरा अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि0)

दो देखा आपने झूठ के सर पांव नहीं होते, होशियार रहे भाईयो आपका एक झूठ जो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ मंसूब किया गया आपको दोजख के गहरे गढ़े मे फेक सकता है

दौरे उमर फारूख रजि0

तरावीह के मुत्तालिक कहा जाता है कि दौरे उमर फारूख रजि0 मे लोग 20 रकअत तरावीह पढ़ते थे और इसके लिये जो असर(ऐसे अकवाल और अफआल जो सहाबा किराम और ताबई की तरफ मनकूल हो) पेश किया जाता है आईये उसकी भी तहकीक करते चले ।

पहला असर–ए– फारूखी :–

हज़रत उमर फारूख रजि0 के बारे मे एक असर मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा मे यहया बिन सईद रह0 से मरवी है जिसमे वो बयान करते है :–

''हज़रत उमर फारूख रजि0 ने एक आदमी को हुक्म दिया कि वो लोगो को 20 रकअत नमाजे तरावीह पढ़ाये''

(ब हवाला तुहफतुल हौजी 3–528, नमाजे तरावीह सफा 64)

तहकीक

इस असर के बारे मे मौलाना शौक नईमुवी हंफी असर अल सुनन मे लिखते है कि इस की सनद के रावी तो सिका है लेकिन यहया बिन सईद अंसारी ने हजरत उमर बिन खत्ताब रजि0 के ज़माने को पाया ही नहीं । और नईमुवी की ताईद करते हुए अल्लामा अब्दुर्रहमान मुबारकपुरी तहफतुल हौजी मे

लिखते है कि ये असर मुनकतेए(वो जईफ हदीस जिसकी सनद किसी भी वजह से मुतसल न हो) और ना काबिले इस्तदलाल व हुजजत है ।

दुसरा असर–ए–फारूखी :–

सुनन कुबरी बैहकी और बाज दीगर कुतुबे हदीस मे एक दुसरा असर यजीद बिन खुसैफा के तरफ से साईब बिन यजीद से मरवी है जिसमे वो बयान करते है कि लोग हज़रत उमर रजि0 के दौरे खिलाफत मे 20 रकअत तरावीह पढ़ते थे कारी हजरात 100–100 आयत तिलावत करते और हजरत उस्मान रजि0 के खिलाफत के जमाने मे लोग तवील कयाम की तकलीफ के पेशे नज़र छड़ियो या लाठियो का सहारा लेते थे ।(फतुहुल बारी 4–253, नमाजे तरावीह सफा 49,61,62)

तहकीक

इसमे पहली बात जो इसे जईफ बनाती है है वो इब्ने खुसैफा है अगरचे ये सिका है लेकिन इमाम अहमद बिन हंबल रह0 ने इसे मुनकरिने हदीस कहा है, इमाम ज़ैहबी ने इसे मीजान अला एतेदाल मे जिक्र किया है जो इसके मुताकल्लिम अलैह (अकेला रावी) होने पर दलालत करता है ।

दूसरी बात जो इसे जईफ बनाती है वो ये है कि इब्ने खुसैफा की रिवायत मे गिनती के यकीन के लेहाज से इख्तेलात (उलझन, उम्र ज्यादा हो जाने पर कुव्वते हाफिजा का कमजोर हो जाना) पाया जाता है, वो साईब बिन यजीद से कभी 11 रकअत जिक्र करते है और कभी 21 और 21 के जिक्र के साथ ''मेरा ख्याल है'' कहते है ।

तीसरी बात ये मुहम्मद बिन युसुफ साईब बिन यजीद के भांजे है इस रिश्तेदारी की पेशे नज़र वो अपने मामू की रिवायत को किसी भी दूसरे रावी से ज्यादा जानते है लेहाजा जिस अदद को उन्होने ने बयान किया है उसे ही तरजीह होगी । नीज ये असर उम्मुल मोमेनीन हज़रत आयशा रजि0 से मरवी मरफू हदीस के भी मुवाफिक है ।

तीसरा असर :-

उमदतुल कारी मे अल्लामा ऐनी हंफी ने इब्ने अब्दुल बर के हवाले से लिखा है कि हारिस बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी जियाद से मरवी है कि साईब बिन यजीद फरमाते है :-

''हज़रत उमर फारूख रजि0 के अहदे खिलाफत मे लोग 23 रकअते पढ़ते थे ।'' (उमदतुल कारी 3,5-357)

तहकीक

इस असर की सनद भी जईफ है क्योकि इब्ने अबी जियाद का हाफिजा कमजोर है । इब्ने अबी हातिम ने अपने वालिद से नकल किया है कि ये मुनकर रिवायत बयान करता है । और ये इमाम मालिक के नजदीक काबिले एतमाद नहीं ।

चौथा असर :-

मुवत्ता इमाम मालिक और सुनन कबरी बैहकी मे यजीद बिन रोमानी बयान करते है :-

''हज़रत उमर की अहद खिलाफत मे लोग रमज़ान मे 23 रकअत से कयाम किया करते थे ।'' (उमदतुल कारी 4,7-178, फतुहुल बारी)

तहकीक :-

इमाम मालिक रह0 ने फरमाया है कि यजीद बिन रोमानी हज़रत उमर रजि0 से नहीं मिले, यानि उन का जमाना ही नहीं पाया, इमाम ज़ैली हनफी ने इस बात की ताईद नसबुल रायया 2-154 मे की है । और इमाम नौवी रह0 ने भी इस असर को जईफ करार दिया है । बैहकी ने इस असर को मुर्सल (ऐसी रिवायत जिसमे ताबई और मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के बीच मे किसी सहाबा का रिवायत न करना और ताबई सीधे रसुलुल्लालाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करे) करार दिया है क्योकि यजीद बिन रूमानी की हज़रत उमर बिन ख्त्ताब रजि0 से मुलाकात ही नहीं हुई

कुछ और असर हज़रत अली रजि0 की तरफ मंसूब किये जाते है वो भी जईफ है । और उनके जिक्र का यहां कोई मतलब भी नहीं है । क्योकि 20 रकअत की रिवायत हज़रत उमर बिन खत्ताब रजि0 की तरफ ज्यादा मंसूब की गई है । और हमे इल्ज़ाम भी दिया जाता रहा है कि नाऊजुबिल्लाह अहले हदीस तरावीह की नमाज़ को उमर की बिदअत करार देते है । हमने यहां पर वजाहत कर दी है

उससे जो इल्म का शौक रखते है वो शायद मजीद तहकीक करके हक का पता लगा सकते है कि उमर रजि0 की कौन ज्यादा इज्जत कर रहा है ।

और अब हम आगे कुछ रिवायते नकल करते है जो 11 रकअत तरावीह को सहीह साबित करती है :-

पहली हदीस

''साईब बिन यजीद बयान करते है कि अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर बिन खत्ताब रजि0 ने हज़रत अबी बिन काब और हज़रत तमीमदारी रजि0 को हुक्म फरमाया कि वो लोगो को 11 रकअते पढ़ाये और इमाम एक एक रकअत मे 100-100 आयते पढ़ता हत्ता कि हम थक कर असा का सहारा लेने पर मजबूर हो जाते थे और तुलुअ फजर के करीब जाकर हम नमाज़े तरावीह से फारिग होते थे ।'' (मुवत्ता इमाम मालिक,मिश्कात 407, सुनन कुबरी, बैहकी 2-496)

तहकीक:-

इस हदीस को नकल करके मौलाना शौक नईमुवी हंफी लिखते है ''इसकी सनद सहीह है'' अल्लामा अलबानी रह0 ने भी इसकी सनद को सहीह करार दिया है ।

दुसरी हदीस :-

''सय्यदना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजि0 से रिवायत है कि हमे रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रमजान मे नमाज़ पढ़ाई आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 8 रकअत और वित्र पढ़े ।'' (सहीह इब्ने खुजैमा 2-138, सहीह इब्ने हब्बान)

तहकीक :-

इसकी सनद मे याकुब अलकमी पर जईफ होने का इल्जाम है जबकि वो जम्हूर उलेमा के नज़दीक सहीह है ।

तीसरी हदीस :–

''सैय्यदना अबी बिन काब रजिअल्लाह अन्हू से रिवायत है कि मैने रमज़ान मे 8 रकअत और वित्र पढ़े और नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया तो आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ भी नहीं फरमाया ।'' (मुसनद अबी यहला 3–236)

तहकीक :–

इसे अबू यहला ने रिवायत किया और इसी तरह तबरानी ने रिवायत किया और इस की सनद हसन है । इस हदीस की सनद वहीं है जो हदीसे जाबिर रजि0 की है । इस तकरीरी हदीस से भी तरावीह 11 रकअत ही साबित हो रही है ।

सुन्नत खुलफा–ए–राशेदीन

रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :–

''पस तुम मे से जो ये इख्तेलाफ पाए तो उस पर लाज़िम है कि मेरी सुन्नत और मेरे खुलफा–ए–राशेदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ ले, इसे अपने दांतो के साथ पकड़ लो ।'' (सुनन तिर्मिजी 2–2676)

इस हदीस के बारे मे इमाम तिर्मिजी ने फरमाया :– हदीस हसन सहीह है ।

याद रहे कि सैय्यदना उमर रजि0 का खलीफा राशिद होना नसे सहीह से साबित है और इस पर मुसलमानो का इज्माअ है ।

एक दूसरी हदीस मे है कि नबी करीम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया :–

''मेरे बाद इन दो शख्सो अबूबक्र और उमर की इक्तेदा करना ।'' (सुनन तिर्मिजी2–3662, इब्ने माजा 97)

इस हदीस के बारे मे इमाम तिर्मिजी ने फरमाया :– हदीस हसन है ।

लेहाज़ा साबित हुआ कि ये फारूखी हुक्म भी हदीस मरफू के हुक्म मे है, जबकि मरफू अहदीस भी इस की ताईद करती है और एक भी सहीह मरफू हदीस इस के मुखालिफ नहीं है ।

दौरे फारूखी मे तरावीह की दलीले

पहली दलील :–

''सैय्यदना साईब बिन यज़ीद रजि0 से रिवायत है कि हम उमर बिन खत्ताब रजि0 के ज़माने मे 11 रकअते पढ़ते थे'' (सुनन सईद बिन मंसूर, हाशिया असार अल सुनन 250)

तहकीक :–

इस रिवायत के तमाम रावी जम्हूर की नज़दीक सिका है ।

दुसरी दलील :–

''बेशक उमर रजि0 ने लोगो को अबी बिन काब रजि0 और तमीमदारी रजि0 पर जमा किया, बस वो दोनो 11 रकअत पढ़ाते थे ।'' (मुसन्निफ इब्ने अबी शैबा 2–39, हदीस 7670)

तहकीक :–

इस रिवायत की सनद बिल्कुल सहीह है और इस के सारे रावी सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम के है और बिला शक सिका है ।

तीसरी दलील :–

अमीरूल मोमिनीन सैय्यदना उमर बिन खत्ताब रजि0 से ब सनद सहीह मुतसल 20 रकअत तरावीह कतअन साबित नहीं है यहया बिन सईद अल अंसारी और यजीद बिन रूमानी की रिवायते मुनकतेए है (इस बात का एतराफ हंफी व तकलीदी उलेमा ने भी किया है) और बाकी जो कुछ भी है वो न तो खलीफा का हुक्म है और न खलीफा का अमल और न खलीफा के सामने लोगो का अमल, जईफ, व मुनकतेए रिवायत को वही शख्स पेश करता है जो खुद जईफ होता है ।

चौथी दलील :–

इमाम दारूल हिजरत मालिक बिन अनस रह0 से मरवी है :–

''मै तो अपने लिये 11 रकअत कयाम रमज़ान तरावीह का कायल हूं और इसी पर उमर बिन खत्ताब रजि0 ने लोगो को जमा किया था, और यही रसुलुल्लाह सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की नमाज़ है, मुझे पता नहीं कि लोगो ने ये बहुत सी रकअते कहां से निकाल ली है ?'' (किताबुल तहज्जुद सफा 76 हवाला 890)

तो देखा भाईयो आपने कि सहीह सनद से तरावीह की नमाज 8 रकअत तरावीह और 3 वित्र सुबह की धुप की तरह रौशन है । उन सब पर अल्लाह की ढेरो रहमते हो जो सिर्फ अल्लाह और उसके महबूब रसुल की इताअत करते हुए इस दुनिया से कुच कर गये अल्लाह उनकी कब्रो को नूर से भर दे । आमीन । अल्लाह हम सब को सिर्फ अपनी और अपने महबूब रसुले अरबी हज़रत मुहम्मद सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करने की समझ अता करे । आमीन या रब्बुल आलेमीन ।

वा आखरूदवानि वल हम्दुल्लिाहे रब्बील आलमीन ।

इस्लामिक दावाअ सेन्टर,
रायपुर, छत्तसीगढ़